Received: Aug '23
Revised:
Accepted: Sep '23

© 2023 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

MAHATMA GANDHI'S CONTRIBUTION TO WOMEN'S WELFARE: A MYTH OR REALITY
महिला कल्याण में महात्मा गांधी का योगदानः एक मिथक या वास्तविकता

Dr. Susheela Devi Yadav
Assistant Professor, Department of Political Science, Dr. B.R. Ambedkar Govt. College, Sriganganagar
E-mail: sushilayadav339@gmail.com

ABSTRACT

Gandhi is truly a great hero of Indian political history. His contribution to the Indian freedom struggle is supreme. The most charismatic thing about Gandhiji is that his contribution was not limited to any one field. He is everywhere in Indian political history, especially before 1947 and after the separation of the country into two parts in 1947. Gandhi is a philosopher, spiritual and political leader, women's activist, social worker, and many others. In the presented research, Gandhiji's views regarding women have been highlighted in detail. In the presented research paper, an attempt has been made to highlight Gandhi's contribution to women's welfare from both positive and negative perspectives.

गांधी वास्तव में भारतीय राजनीतिक इतिहास के महानायक हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान सर्वोच्च है। गांधी जी के बारे में सबसे करिश्माई बात यह है कि उनका योगदान किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वह भारतीय राजनीतिक इतिहास में हर जगह हैं, खासकर 1947 से पहले और 1947 में देश के दो हिस्सों में अलग होने के बाद। गांधी एक दार्शनिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता, महिला कार्यकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता और कई अन्य हैं। प्रस्तुत शोध में गांधी जी के महिलाओं के संबंध में विचारों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।प्रस्तुत शोध पत्र में,महिला कल्याण में गांधी के योगदान को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों नजरिए से उजागर करने का प्रयास किया है।

Keywords: Gandhi, Myth, Reality, Women.
मुख्य शब्द –गांधी, मिथक, वास्तविकता, महिलाएं।

शोध का उद्देश्य

शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित है

- शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य महिला कल्याण में गांधी के योगदान का वास्तविकता के रूप में अध्ययन करना है।
- महिला कल्याण में गांधी के योगदान का मिथक के रूप में अध्ययन करना।
- यह विश्लेषण करना है कि महिला कल्याण में गांधी का योगदान वास्तविकता था या मिथक।
- शोध पत्र का उद्देश्य गांधी जी द्वारा दिए गए महिला कल्याण संबंधी विचारों को जन–जन तक पहुंचना है।

शोध का महत्व

विश्लेषण में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि महिलाओं के प्रति गांधी की प्रगतिशील सोच वास्तव में अनुकरणीय थी और अपने समय की महिलाओं के लिए फायदेमंद साबित हुई। अतः यदि हम उनके योगदान की तुलना वास्तविकता और मिथक के मापदंडों पर करें तो सचमुच यही प्रतीत होता है कि उन्होंने सही मायने में महिला कल्याण में योगदान दिया। वह महिला सशक्तिकरण और उत्थान में दृढ़ विश्वास रखते थे।

शोध प्रविधि

शोध अध्ययन का विषय द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित एवं वर्णनात्मक है। अतः इसमें अध्ययन उपलब्ध साहित्य, पत्र, गोपनीय दस्तावेजों, डायरियों एवं संग्रहालयों में उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर किया गया है।
यह शोध पत्र मुख्य रूप से महिला सशक्तीकरण के संबंध में गांधी के विचारों और कार्यों के साथ–साथ महिलाओं के प्रति उनके व्यवहार पर गुणात्मक आंकड़ों पर आधारित है।

परिचय

महात्मा गांधी भारतीय इतिहास और राजनीति के सबसे महान नेताओं और समाज सुधारकों में से एक हैं। उन्हें 'हमारे राष्ट्रपिता' और बापू के रूप में जाना जाता है। वह न सिर्फ भारत में बल्कि विदेश में भी मशहूर हैं। विदेशी धरती पर कई जगहों पर उनकी प्रतिमाएं देखी जा सकती हैं। उनकी याद में संयुक्त राष्ट्र ने उनकी जन्मतिथि यानी 2 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किया है। गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को हुआ था। उनका जन्म स्थान गुजरात के कैथवाड में स्थित पोरबंदर था। वह पेशे से बैरिस्टर थे और 1893 में एक मुकदमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका गए और 22 साल तक वहीं रहे। उन्होंने वहां अहिंसा और सत्याग्रह का अभ्यास किया। जब वे भारत लौटे, तो वे सामाजिक समानता के उपदेशक के रूप में उभरे और देश को बड़े पैमाने पर सत्याग्रह और अहिंसा के साधनों से सुसज्जित किया। उन्होंने 1917 में चंपारण सत्याग्रह, 1930–34 में सविनय

अवज्ञा आंदोलन और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की। दुर्भाग्य से, भारत की आजादी के ठीक बाद, 30 जनवरी, 1948 को उनकी हत्या कर दी गई।

गांधीजी की प्रमुख कृतियाँ

- आत्मकथा सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी,
- शांति और युद्ध में अहिंसा,
- अहिंसक सत्याग्रह,
- सत्याग्रह,
- युवा भारत।

उनकी जीवनी को देखने के बाद हमने पाया कि गांधी वास्तव में भारतीय राजनीतिक इतिहास के महानायक हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान सर्वोच्च है। गांधी जी के बारे में सबसे करिश्माई बात यह है कि उनका योगदान किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। वह भारतीय इतिहास में हर जगह हैं।

महिला कल्याण में उनका योगदान

महात्मा गांधी ने उस समय में महिलाओं के हक में आवाज उठाई, जब हमारे समाज में कई तरह की कुरीतियां व्याप्त थीं। उस समय के पुरुष प्रधान समाज में दहेज प्रथा और बाल विवाह प्रचलित थे। महिलाओं का औसत जीवनकाल सिर्फ 27 साल का होता था। उस समय में डिलीवरी के दौरान अक्सर महिलाओं की मौत हो जाती थी। महिलाओं की शिक्षा का स्तर भी तब सिर्फ 2 फीसदी था। उस समय पर्दा प्रथा भी प्रचलित थी। महिलाओं को किसी भी पुरुष के सामने पर्दे में रहने का रिवाज था। अकेले बाहर जाने की मनाही थी, साथ में किसी पुरुष का जाना अनिवार्य माना जाता था। ये सभी चीजें महिलाओं को आगे बढ़ने से रोक रही थीं। गांधी जी ने महसूस किया कि जब तक महिलाओं को इन बंधनों से आजाद नहीं किया जाएगा, उन्हें शिक्षित न किया जाए तब तक समाज प्रगति नहीं कर सकता। इसीलिए उन्होंने अपने भाषणों में महिलाओं को हमेशा महत्वपूर्ण स्थान दिया और उन्हें देश की प्रगति में अहम भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। गांधीजी महिलाओं के सशक्त होने की आवश्यकता को समझते थे और इसीलिए उन्होंने महिलाओं की हर संभव मदद करने की कोशिश की।

महिला कल्याण में गांधी का योगदान वास्तविकता के रूप में

महिलाओ के प्रति गांधी कितने दूरदर्शी थे, ये उनके यंग इंडिया जर्नल में लिखे लेख की एक लाइन से समझते हैं । गांधी लिखते हैं– 'आदमी जितनी बुराइयों के लिए जिम्मेदार है, उनमें सबसे घटिया नारी जाति का दुरूपयोग है। गांधीजी महिलाओं को अपने बराबर मानते थे और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित करते थे। ''उन्होंने कहा कि पुरुष और महिलाएं समान हैं, बौद्धिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से, महिला पुरुष के बराबर है और वह हर गतिविधि में भाग ले सकती है।''उनसे प्रेरित होकर, कई महिलाएं जैसे कस्तूरबा गांधी, मनुबेन, सुशीला नायर , अधाबेन, मीराबेन, सरलादेवी और अन्य महिलाओं ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके साथ काम किया।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार

गांधी जी ने महिलाओं की खराब स्थिति की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया और उनकी स्थिति को सुधारने के लिए अथक प्रयास किये। उन्होंने महिलाओं की असमानताओं को दूर करने के लिए कानून बनवाने के लिए प्रयास किए।

गांधीजी के लिए नारीत्व केवल रसोई तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने इस बात की वकालत की कि ''केवल जब महिला रसोई की गुलामी से मुक्त हो जाती है, तभी उसकी असली आत्मा का पता चल सकता है।

राजनीतिक उत्थान में योगदान

महात्मा गांधी ने कांग्रेस की महिला नेतृत्व को प्रोत्साहन दिया और हर आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की। वर्ष 1921 में जब महिलाओं के मतदान का मुद्दा उठाया गया था तो महात्मा गांधी ने इसका भरपूर समर्थन किया। 2 मई 1936 के हरिजन में भी गांधी ने देश की शिक्षा पर अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए स्पष्ट रूप से यह विचार सामने रखा, कि स्त्री इतनी सशक्त हो जाए कि अपने पति को भी 'न' कहने में संकोच ना हो।

गांधीजी ने हमेशा महिलाओं को आगे आने और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने एक बार कहा था कि ''मैं उस विधायिका का बहिष्कार करूंगा जिसमें महिला सदस्यों की उचित हिस्सेदारी नहीं होगी'', इससे संकेत मिलता है कि गांधी राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में दृढ़ता से विश्वास करते थे। वह नहीं चाहते थे कि महिलाएं सिर्फ घर पर ही रहें। इसके बजाय, वह चाहते थे कि महिलाएँ राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लें। गांधीजी का मानना था कि, ''महिलाओं को वोट और समान दर्जा मिलना चाहिए।

महिलाओं और पत्नी पर प्रगतिशील विचार

वह महिलाओं को प्रथा और कानून के तहत दबी हुई पीड़ित महिला मानते थे जिसके लिए मुख्य रूप से पुरुष जिम्मेदार हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि ''पत्नियों को गुड़िया और भोग की वस्तु नहीं होना चाहिए, बल्कि सामान्य सेवा में सम्मानित व्यक्ति के रूप में व्यवहार किया जाना चाहिए।

नारी का सम्मान

गांधी ने लिखा, ''अगर वह हमलावर की शारीरिक ताकत का सामना नहीं कर सकती, तो उसकी पवित्रता उसे उदाहरण के लिए सीता का उल्लंघन करने में सफल होने

से पहले मरने की ताकत देगी'' (हरिजन, 14 जनवरी, 1940)। गांधी जी ने महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया क्योंकि उन्होंने कहा था कि जब किसी महिला पर किसी के द्वारा हमला किया जाता है, तो उसे आत्म–सुरक्षा के लिए सब कुछ करना चाहिए। भगवान ने उसे नाखून और दांत दिये हैं।उसे पूरी ताकत से उनका उपयोग करना चाहिए।'' (हरिजन, 01 मार्च, 1942)

महिला शिक्षा में योगदान

गांधी चाहते थे कि महिलाओं को शिक्षा मिले लेकिन पुरुषों और महिलाओं दोनों को दी जाने वाली शिक्षा जीवन में उनके पूर्व–निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार होनी चाहिए। महिला शिक्षा पर महात्मा के विचार उनके इस विश्वास पर आधारित हैं कि महिला पुरुष की पूरक है

महिला कल्याण में गांधी का योगदान एक मिथक के रूप में

विभिन्न क्षेत्रों में गांधी के योगदान को वास्तविकता के रूप में देखने के बाद उन आधारों की समीक्षा करना भी उतना ही जरुरी है जिन आधारों पर गांधी की आलोचना की गई है। यह पक्ष महिला कल्याण में गांधी के गौरवशाली योगदान पर सवाल उठाएगा।

मासिक धर्म और वेश्याओं पर विचारः इस पर गांधी जी के विचार अलग थे। जैसा कि ''अपनी पुस्तक 'सेक्स एंड पावर' में, रीता बनर्जी ने उल्लेख किया है कि गांधी मासिक धर्म को महिलाओं के शरीर की विकृति के रूप में देखते थे। उन्होंने वेश्याओं को ''पतित महिला'' के रूप में संदर्भित किया, अब सवाल ये है कि क्या वेश्या होने के लिए महिलाएं खुद जिम्मेदार हैं?

बलात्कार पर विचारः बलात्कार और महिलाओं के पहनावे पर गांधी जी के अजीब विचार थे। दरअसल, आज के संदर्भ में बलात्कार पर उनके विचारों की पीड़िता को शर्मसार करने वाली आलोचना की जा सकती है। गांधी जी ने कहा था कि ''यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि एक निडर महिला, जो जानती है कि उसकी पवित्रता उसकी सबसे अच्छी ढाल है, कभी भी अपमानित नहीं हो सकती। पुरुष कितना भी जानवर क्यों न हो, वह उसकी चमकदार पवित्रता की लौ के सामने शर्म से झुक जाएगा''

महिलाओं के प्रति जटिल और विरोधाभासी विचारः एक ओर, गांधी ने महिला समानता को बढ़ावा दिया। दूसरी ओर, महिलाओं के प्रति गांधी का नजरिया जटिल और विरोधाभासी माना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह महिलाओं द्वारा खुद को अधिक आकर्षक बनाने के खिलाफ थे। क्या सच में अपने साथ हुए हर गलत काम के लिए महिलाएं जिम्मेदार हैं?

महिला कल्याण में गांधी का योगदानः एक वास्तविकता या मिथक

गांधी के योगदान के दोनों आयामों पर गौर करने के बाद यह विश्लेषण करना जरूरी है कि महिला कल्याण में गांधी का योगदान हकीकत है या मिथक? खैर, इस पेचीदा सवाल का सीधा जवाब खतरनाक या अन्यायपूर्ण हो सकता है। हमारे राष्ट्र के प्रति स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति। कुछ कमजोरियाँ या खामियाँ हैं। लेकिन उनकी खामियों के आधार पर हम उनके योगदान को नकार नहीं सकते। गांधी ने वास्तव में महिलाओं के कल्याण में योगदान दिया था। हालाँकि, विवाद तो हैं लेकिन उनका योगदान ज्यादा है. महिलाओं के प्रति गांधी जी की प्रगतिशील सोच सचमुच अनुकरणीय थी और अपने समय की महिलाओं के लिए लाभकारी सिद्ध हुई। अतः यदि हम उनके योगदान की तुलना वास्तविकता और मिथक के मापदंडों पर करें तो सचमुच यही प्रतीत होता है कि उन्होंने वास्तव में महिला कल्याण में योगदान दिया।

निष्कर्ष

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि यह कोई रहस्य नहीं था कि मोहनदास गांधी का निजी जीवन विशेष रूप से महिलाओं के संदर्भ में असामान्य था। और उनके विचार हमेशा सही नहीं थे।स्वतंत्र भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भी नवविवाहितों को अपनी आत्मा की खातिर ब्रह्मचारी रहने की गांधी की सलाह को असामान्य और अप्राकृतिक बताया था। लेकिन महिलाओं की बेहतरी और सशक्तिकरण के प्रति उनका सकारात्मक योगदान उस समय की हकीकत थी। उन्होंने महिलाओं के उत्थान के लिए अथक प्रयास किये। उनके अनुसार महिलाएं बेहतर जीवन पाने की हकदार थीं। निःसंदेह, गांधी कर्मयोगी थे और उन्होंने महिलाओं को नया मार्ग प्रदान किया । जिससे उन्हें स्वतंत्रता, न्याय और समानता मिलेगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा ,बी.एम. और शर्मा, रामकृष्ण (2007). गांधी दर्शन के विविध आयाम .जयपुर ,राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी
2. चंदेल,धर्मवीर (2015)गांधी चिंतन के विभिन्न पक्ष जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी
3. पटेल, सुजाता (2018, जून)। 'महिलाओं का निर्माण एवं पुनर्निर्माण' गांधी. आर्थिक एवं राजनीतिक साप्ताहिक- www.researchgate.net
4. कपाड़िया, सीता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलिः महिलाओं और सामाजिक परिवर्तनों पर उनके

विचार।www.gandiyaashramsevagram.org/ganthi&articles/tribute&to&mahatma&ganthi&his&views&on&women&and&social&changes.php

5. बर्मन, पिंकुमणि (2013, जनवरी)। 'गांधी और महिला सशक्तिकरण के लिए उनका दृष्टिकोण।' IJCAESA www.citeseerÛ.ist.psu.edu/viewdoc/
6. महिला सशक्तिकरण पर नंदेला, कृष्णन गांधी www.mkganthi.org/articles/womens_empowerment.html
7. 8. देसाई, चित्रा से लिया गया। गांधी की समाज कल्याण की अवधारणा
8. www.ganthi&manibhavan.org/activities/essay/Socialwelfare.html
9. कुमार, गिरिजा (2010) गांधी और उनकी महिला मित्र दिल्ली, अरिहंत पब्लिकेशन
10. चंद्रकांत (2022)मजबूरी का नाम महात्मा गांधी, नई दिल्ली, निरहुआ पब्लिकेशन
11. रोमा रोला (2014) शांति और अहिंसा के दूत महात्मा गांधी, दिल्ली, कीर्ति प्रकाशन